Q. → 19 वीं सदी में भारत में विभिन्न सामाजिक सुधार आन्दोलन का वर्णन करें ?

Ans →

उन्नीसवीं सदी भारत के इतिहास का महत्वपूर्ण युग है। इसी युग में भारत में सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में एक नवीन विचारधारा का जन्म हुआ। इसी के फलस्वरूप भारत में सामाजिक सुधार-आंदोलन आरंभ हुआ। इसी समय देश में राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, महादेव गोविंद रानाडे, सैयद अहमद आदि अनेक समाजसुधारक एवं धर्मसुधारक हुए जिन्होंने अपने सुधार-कार्यों से मृतप्राय समाज को नवजीवन प्रदान किया।

राजा राममोहन राय ब्रह्म समाज

राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत और आधुनिक भारत का जनक कहा जाता है। वास्तव में, उनके प्रादुर्भाव से भारतीय इतिहास के एक नया युग का आरंभ हुआ था। भारतीय सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में उनका विशिष्ट स्थान है। राजा राममोहन राय का जन्म बंगाल के एक कुलीन ब्राह्मण - परिवार में 1772 ई० में हुआ।

(1828) ब्रह्म समाज – राजा राममोहन राय ने 1818 ई० में कलकत्ता में ब्रह्म समाज का स्थापना किया। इसने बंगाल के सामाजिक जीवन में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समाजसुधारक → राजा राममोहन राय एक उच्चकोटि के समाजसुधारक थे। उस समय भारतीय समाज में तरह-तरह की कुराइयाँ घुस गई थीं। राजा राममोहन राय ने उन्हें दूर करने का निश्चय किया। उन्होंने समाज की सबसे बड़ी बुराई सती प्रथा ~~[illegible]~~ पर सबसे अधिक ध्यान दिया और उसके विरुद्ध लगातार आंदोलन किया। उन्हीं के प्रयत्न के कारण 1829 ई० में लॉर्ड बेंटिक ने कानून बनाकर इस प्रथा को गैरकानूनी घोषित किया। इसके अतिरिक्त स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह का समर्थन किया। जातिभेद, वर्णभेद पर कड़ा प्रहार किया। वे स्त्रियों को समान अधिकार तथा उनके संपत्तिसंबंधी अधिकार के समर्थक थे।

(2.) ईश्वरचंद्र विद्यासागर → ईश्वरचंद्र विद्यासागर का जन्म बिहार के करमाटाँड़ नामक स्थान में हुआ था। वे उच्चकोटि के विद्वान थे उन्होंने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए ही अपना जीवन अर्पित कर दिया। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भी उनके देन महत्वपूर्ण है। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने लड़कियों की शिक्षा के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उनके प्रयास से ही बालिका विद्यालयों की स्थापना की। उस समय पुनर्विवाह के लिए 1856 ई० में कानून पास करवाये। उन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह एक विधवा से ही किया।

(3.) आर्य समाज स्वामी दयानंद सरस्वती →

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 ई० में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना किये। अका प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश है।

समाजसुधार के क्षेत्र में →

आर्यसमाज ने बालविवाह, बहुविवाह, छुआछूत समुद्रयात्रा - निषेध आदि को समाज के लिए विनाशकारी बताकर उनका घोर विरोध किया और विधवाविवाह, स्त्रीशिक्षा आदि को प्रोत्साहित किया। उस समय छुआछूत की भावना प्रबल थी। अछूतों पर तरह-तरह के अत्याचार होते थे। अपनी इसने स्त्रियों की दशा में सुधार लाने के लिए अनेक अनाथालयों एवं विधवाश्रमों की स्थापना की।

(4) प्रार्थनासमाज आत्माराम पांडुरंग

प्रार्थना समाज की स्थापना महाराष्ट्र में 1867 ई० में आत्माराम पांडुरंग ने किये। इस संस्था के उद्देश्य था समाजसुधार था। इस समाज ने जातिव्यवस्था का विरोध किया और अंतर्राष्ट्रीय विवाह, विधवाविवाह, स्त्रीशिक्षा आदि पर जोर दिया। अछूतोद्धार और दलितों एवं पीड़ितों की अवस्था में सुधार लाने के उद्देश्य से कई जन कल्याण - संस्थाओं की स्थापना की।

Scanned with CamScanner

प्रार्थना समाज की सफलता का श्रेय रानाडे को है। रानाडे के नेतृत्व में इस संगठन ने भारतीय समाज के आधुनिकीकरण के उद्देश्य से जातिप्रथा का उन्मूलन, अंतर्जातीय विवाह, विवाह की आयु में वृद्धि, बहुपत्नी की प्रथा को हतोत्साहित करना, विधवा-पुनर्विवाह, स्त्री-शिक्षा आदि कार्यक्रमों के लिए अभियान चलाए। दलितों के उद्धार के लिए दलित मिशन स्थापित किए।

(5) रामकृष्ण मिशन – स्वामी विवेकानंद :→ स्वामी विवेकानंद ने कलकत्ता के निकट बेलूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 ई० में अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस की यादगार में की थी। सन 1892 ई० में उन्होंने अपने गुरु की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार का कार्य दक्षिण भारत से प्रारंभ किया। सन 1893 ई० में शिकागो में सर्व धर्मसम्मेलन में भाग लेने के लिए अमेरिका गए। वहाँ उन्होंने अपना इतिहासप्रसिद्ध भाषण दिया। उनके व्यक्तित्व तथा व्याख्यानों का लोगों पर बहुत बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा।

स्वामी विवेकानंद के धर्म में मानव समाज की सेवा का महत्वपूर्ण स्थान था। स्वामी विवेकानंद शिक्षा, स्त्री-पुनरुद्धार और आर्थिक प्रगति के पक्ष में थे। निर्धनता, अशिक्षा, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता पर उन्होंने कठोरतम प्रहार किया। वे मानव सेवा में विश्वास रखता था।

(6) थियोसोफिकल सोसाइटी – इसकी स्थापना 1875 ई० में न्यूयार्क में हुई थी। इसके संस्थापक श्रीमती ब्लैवेट्स्की और कर्नल आलकाट थे। 1879 ई० में वे दोनों व्यक्ति भारत आए और उन्होंने 1886 ई० में मद्रास के निकट अड्यार नामक स्थान में सोसाइटी के मुख्यालय की स्थापना की। 1893 ई० में श्रीमती एनी बेसेंट स्थायी रूप से भारत में बसकर थियोसोफिकल सोसाइटी के कार्य में लग गईं। श्रीमती बेसेंट ने बनारस में सेंट्रल हिंदू स्कूल की स्थापना की, जो बाद में कॉलेज और कुछ दिनों के बाद हिंदू विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हो गयी।

(7) देवसमाज → 1887 ई० में सत्यानंद अग्निहोत्री ने देवसमाज की स्थापना की थी। देवसमाज के लोग ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते। इस समाज का केंद्र लाहौर में था।

(8) ज्योतिराव गोविंदराव फुले → महाराष्ट्र में उत्पीड़ित जातियों के सामाजिक संगठन के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। ज्योतिबा ने अपना संपूर्ण जीवन दलितों की सेवा में लगाया। ज्योतिबा फुले ने 1873 ई० में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। इस समाज का उद्देश्य निचली जातियों तथा दूसरे उत्पीड़ित वर्गों के लिए समान अधिकार प्राप्त करना था। ज्योतिबा फुले ने बालिकाओं, खासकर उत्पीड़ित जातियों के बालिकाओं के लिए स्कूल की स्थापना की। उन्होंने दलितों की शिक्षा के लिए ज्ञानमंदिर की स्थापना की। विधवाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए भी उन्होंने प्रयास किया।

(9) श्री नारायण गुरु → उन्नीसवीं शताब्दी में केरल में जातिभेद तथा छुआछूत समस्या सबसे जटिल थी। अछूत लोग मंदिर नहीं जा सकते थे अपने से ऊँची जाति के स्कूलों में उनका पढ़ना मना था। इस जातिगत उत्पीड़न के विरुद्ध श्री नारायण गुरु ने आंदोलन चलाया।

(10) मुस्लिम समाज में सुधार आंदोलन →

नवाब अब्दुल लतीफ → मुसलमानों में सुधार-आंदोलन का आरंभ बंगाल में नवाब अब्दुल लतीफ ने 1863 ई० में कोलकाता में मोहम्मडन लिटरेरी सोसाइटी की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य मुसलमानों में अंगरेजी भाषा तथा आधुनिक विज्ञान की शिक्षा का प्रसार करना था। इस संस्था ने बंगाल में अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। बंगाल में मुसलमानों में शिक्षा के प्रचार के क्षेत्र में इस संस्था का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

Scanned with CamScanner

(11) सर सैयद अहमद खाँ और अलीगढ़ आंदोलन →

मुस्लिम समाज सुधार आंदोलन में सैयद अहमद खाँ की सबसे प्रमुख भूमिका थी। मुसलमानों को आधुनिक शिक्षा देने तथा उन्हें सरकारी नौकरी के लिए योग्य बनाने का प्रयास किए इसके लिए उसने मुसलमानों से अंग्रेजी पढ़ने पर जोर दिया। वे पर्दा प्रथा, बहुविवाह आदि के विरोधी थे। पाश्चात्य शिक्षा, स्त्री शिक्षा एवं विदेश भ्रमण के समर्थक थे। सर सैयद खाँ ने मोहम्मडन-एंग्लो-ओरियंटल कॉलेज की स्थापना किया। यहीं पर आधुनिक विचारधारा के मुसलमानों ने शिक्षा प्राप्त की।

(12) देवबंद आंदोलन → इसका संबंध उत्तरप्रदेश में सहारनपुर के पास देवबंद से है यहाँ छात्रों को राजनीतिक स्वाधीनता से प्रेम करने की शिक्षा दी जाती थी।

(13) बदरुद्दीन तैयबजी → बदरुद्दीन तैयब जी एक महान राष्ट्रीय नेता थे। वे समाजसुधार में उनकी बड़ी रुचि थी। वे स्त्रियों की स्वतंत्रता के समर्थक थे। उन्होंने मुसलमान में बालविवाह, बहुविवाह, पर्दाप्रथा आदि जैसी प्रचलित बुराइयों का घोर विरोध किया तथा इन्हें दूर करने का प्रयास किया।

(14) सिख → उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलन से सिख समाज भी प्रभावित हुआ इस समाज ने खालसा दीवान की स्थापना की तथा शिक्षा के प्रसार के लिए अमृतसर में खालसा कॉलेज खोला। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न क्षेत्रों में भी सिखों ने स्कूल और कॉलेज की स्थापना की तथा गुरुद्वारा में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति की भी स्थापना की।

Scanned with CamScanner

ईसाई → 1813 ई० के चार्टर ऐक्ट में ईसाई

(15) ईसाई → धर्मप्रचारकों को भारत में धर्मप्रचार के लिए अनेक सुविधाएँ प्रदान की गयी थीं। उन्होंने भारत में ईसाई धर्म के प्रचार एवं शिक्षा के प्रसार में प्रशंसनीय कार्य किए। आज भी ईसाई धर्मप्रचारक भारत के बीहड़ जंगलों में रहनेवाले दलितों एवं आदिवासियों के बीच रहकर उनके उत्थान तथा उन्हें ईसाई धर्म में दीक्षित करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

(16) पारसी → पारसी समाज में सुधार लाने तथा उनके सर्वांगीण विकास में के० आर कामा, बी० एम० मालाबारी, नौरोजी फरदूनजी तथा दादाभाई नौरोजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

विभिन्न समुदायों के अनेक लोगों ने भारतीय समाज के जागरण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। इनमें बहरामजी मालाबारी और पंडित रमाबाई के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

Scanned with CamScanner